कोलकाता केंद्र की गतिविधियां 2012

12 जनवरी 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

काव्यानुवाद पर कार्यशाला

कोलकाता । नलिन मोहन सान्याल के 150 वें जन्म वर्ष पर गत 12 जनवरी 2012 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने 'काव्यानुवाद की समस्याएं' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। नलिनी मोहन सान्याल हिंदी के पहले एम.ए. हैं। वे हिंदी व बांग्ला दोनों भाषाओं के लेखक हैं। उनकी याद में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए कवि, अनुवादक एवं प्रगतिशील वसुधा के सम्पादक राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि अपने देश में अनुवाद का काम उस तरह होता है जैसे कोई पुरानी फिल्म के गीत को याद कर बाथरूम में गुनगुनाने की कोशिश करता है, जबकि इस काम को काफी गंभीरता से लिया जाना चाहिए। भारत में अनुवाद के इतिहास की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि दाराशिकोह ने काफी पहले उपनिषदों का अनुवाद करवाया था वह सांस्कृतिक अनुष्ठान था जबकि अंग्रजों ने फोर्ट विलिमय के माध्यम से अनुवाद का जो कार्य शुरू किया वह उपनिवेश की महत्वाकांक्षी आवश्यकताएं थीं हमारा देश जैसी सांस्कृतिक विभिन्नताओ में जीता है वहां अनुवाद नैसर्गिक प्रक्रिया है। साहित्य का अनुवाद टीका या भाष्य नहीं होता। वह सांस्कृतिक प्रक्रिया का अंग होता है। सोवियत रूस की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि एक समय था जब उस देश ने अपने देश के तमाम साहित्य को दुनिया भर में प्रचारित प्रसारित करने के लिए व्यापक पैमाने पर अनुवाद करवाया था। अनुवाद के लक्ष्य कई बार भिन्न प्रकार के होते हैं। भोपाल से आए कवि, गद्यकार और अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर चुके ओम भारती ने कहा कि कविता का अनुवाद किसी अन्य भाषा में हो ही नहीं सकता। वह मूल कविता की व्याख्या, पुनर्वव्याख्या होता है। शाब्दिक अर्थ बोध होता है। अनुवादक उसमें अपना आंशिक योगदान करेगा, जबकि मूल को मूल रहने देना एक बड़ी चुनौती होती है। अनुवादक अपने को इससे कैसे रोके, यह बड़ी बात है। मूल भाषा के कवि की अभिव्यक्ति को उसी रूप में अक्षुण्ण रखना प्रायः संभव नहीं हो पाता। अनुवाद दरअसल प्रभावी ढंग का अंतरभाषिक संवाद होता है।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए प्रताप राव कदम। मंच पर बैठी हैं डा. चंद्रा पांडेय और नवारुण भट्टाचार्य।

अनुवाद के क्षेत्र में उन्होंने धर्मवीर भारती के संपादन में प्रकाशित विदेशी कवियों की कविताओं के अनुवाद के संकलन 'देशांतर' का उल्लेख किया और उसे मील का पत्थर बताया। उन्होंने देशांतर की दूधनाथ सिंह लिखित और आलोचना में प्रकाशित समीक्षा को भी अनुवाद की समस्याओं को समझने और अनुवाद की संभावना को परखने के लिहाज से महत्वपूर्ण करार दिया और उसे बीजमंत्र माना। गायक, कवि एवं अनुवादक मृत्युजंय कुमार सिंह ने कहा कि एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद केवल शब्दानुवाद और भावानुवाद भर नहीं होता बल्कि उसके सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को भी अभिव्यक्त करना होता है।

कार्यशाला में बाएं से चंद्रा पांडेय, नवारुण भट्टाचार्य. मृत्युंजय कुमार सिंह, राजेंद्र शर्मा और कृपाशंकर चौबे।

उन्होंने हिन्दी की समृद्धि की चर्चा करते हुए कहा कि हिन्दी में उसकी बोलियों और अन्य भारतीय भाषाओं से हेलमेल और संस्कृत से सम्बद्धता के कारण जितने पर्यायवादी शब्द हैं, दूसरी किसी भाषा में नहीं। नीलकंठ और कल्पतरू जैसे शब्दों का अंग्रेजी में अनुवाद बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि छंदबद्ध कविता के अनुवाद में इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि अनुवाद की गयी भाषा में भी छंद हो ताकि वह मूल भाव के करीब पहुंचे।

खंडवा से आए कवि प्रताप राव कदम ने कहा कि बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा था कि उनके वचनों को वे अपने अपने क्षेत्र की भाषा में प्रचारित प्रसारित करें जिससे अनुवाद की प्रक्रिया ने गति पकड़ी। उन्होंने कहा कि 'गीतांजलि' का हालांकि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने स्वयं अंग्रेजी अनुवाद किया था किन्तु उनकी मूल बांग्ला कविताओं की बात कछ और है।

विख्यात बांग्ला साहित्यकार नवारुण भट्टाचार्य ने कहा कि अनुवाद मनुष्य को आपस में जोड़ने की सबसे सशक्त सांस्कृतिक प्रक्रिया है। मनुष्य के संवाद की शक्ति अनुवाद से बढ़ती है। शुद्धता पर जोर नहीं होना चाहिए। डॉ.अभिज्ञात ने कहा कि कई बार किसी कविता का ठीक-ठीक एक अर्थ निकाल पाना ही मुश्किल हो जाता है, मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' कविता उसका उदाहरण है। एक ही कविता का जब उसी भाषा के लोग अलग अलग अर्थ निकालते हैं तो फिर दूसरी भाषा में उसके अनुवाद का क्या हाल होगा। कविता के अनुवाद में परफेक्शन की गुंजाइश कम होती

है।

बाएं से राजेंद्र शर्मा, ओम भारती, केदारनाथ सिंह, नीलकमल, कृपाशंकर चौबे और विमलेश त्रिपाठी

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कवयित्री एवं अनुवादिका डॉ.चंद्रकला पाण्डेय ने कहा कि अनुवाद में एक बड़ी समस्या रचना के सांस्कृतिक संदर्भ को ठीकठीक समझने की होती है। हर रचना का एक सांस्कृतिक संदर्भ होता है, उसे समझे बगैर अनूदित रचना को नहीं समझा जा सकता। एक भाषा के रीति रिवाज दूसरी भाषा से जुड़े लोगों के रीति रिवाज से अलग होते हैं ऐसे में रचना के मूल कथ्य के अनदेखे रह जाने का खतरा होता है। कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के कोलकाता केन्द्र के प्रभारी डॉ. कृपाशंकर चौबे ने किया।

25 फरवरी 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

बांग्ला से एकतरफा संबंध बनाए हुए है हिंदी-महाश्वेता

कोलकाता, 25 फरवरी। विख्यात लेखिका महाश्वेता देवी ने कहा है कि हिंदी एक तरह से बांग्ला से एकतरफा संबंध बनाए हुए है। जिस मात्रा में बांग्ला का सम्क्कालीन साहित्य हिंदी में अनूदित होकर प्रकाशित हो जाता है, उसकी तुलना में बांग्ला में हिंदी रचनाएं नहीं अनूदित होतीं। इस एकतरफा संबंध को दो-तरफा बनाए जाने की जरूरत है। महाश्वेता देवी गत 25 फरवरी की शाम महात्मा गांधी अंतर्राष्टीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता क्षेत्रीय केंद्र में पत्रकारिता और साहित्य के अंतर्संबंध पर आयोजित संगोष्ठी में अध्यक्षकीय वक्तव्य दे रही थीं। यह संगोष्ठी हरिराम पांडेय की किताब कही-अनकही और हरेंद्र कुमार पांडेय के भोजपुरी उपन्यास जुगेसर के विशेष संदर्भ में आयोजित थी। इसे संबोधित करते हुए महाश्वेता देवी ने कहा कि पत्रकारिता और साहित्य में अंतर्संबंध नहीं होने पर दोनों अनुशासनों को नुकसान होगा। उन्होंने कहा कि वे अपनी पत्रिका बर्तिका में हिंदी के समकालीन साहित्य को अनूदित कर लाती हैं और लाती रहेंगी।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र की संगोष्ठी में बाएं से केदारनाथ सिंह, महाश्वेता देवी और कृपाशंकर चौबे।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए हिंदी के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने कहा कि आज की पत्रकारिता अपवादों को छोड़कर साहित्य को खारिज कर चुकी है। आज संपादक अमूमन संपादकीय नहीं लिखते। उन्होंने कहा कि बाजारवाद के दबाव में साहित्य और पत्रकारिता में मेल नहीं रह गया है। संगोष्ठी को सुब्रत लाहिड़ी, अजय महमिया, हरिराम पांडेय और हरेंद्र कुमार पांडेय ने भी संबोधित किया।

संवादः संगोष्ठी के दूसरे सत्र में महाश्वेता देवी से संवाद का कार्यक्रम हुआ। केदारनाथ सिंह ने महाश्वेता देवी से पूछा कि अखबारी लेखन और साहित्यिक लेखन में वे क्या अंतर महसूस करती हैं, इसके जवाब में महाश्वेता देवी ने कहा कि अखबारी लेखन में तात्कालिकता का दबाव होता है जबकि सर्जनात्मक लेखन में वह दबाव नहीं होता। अखबारी लेखन में जगह की भी सीमा होती है। उसमें विस्तार से टिप्पणी की गुंजाइश नहीं होती जबकि सर्जनात्मक लेखन में यह गुंजाइश होती है। हालांकि दोनों के लेखन की प्रक्रिया बहुत ज्यादा भिन्न नहीं होती। एक अन्य सवाल के जवाब में महाश्वेता ने कहा कि उन्होंने आजीवन आदिवासियों के मूलभूत सवालों के लिए संघर्ष किया और राज्य सरकार से वे अपेक्षा रखती हैं कि यहां के आदिवासियों के लिए पर्याप्त पेयजल, भोजन व आवास के साथ ही शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया हों। संगोष्ठी व संवाद कार्यक्रमों का संचालन विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

10 मार्च 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

कवि होकर जीना न जीने के बराबर-अरुण कमल

कोलकाता, 10 मार्च। हिंदी के सुपरिचित कवि अरुण कमल ने कहा है कि कवि होकर जीना नहीं जीने के बराबर है। कवि को आम आदमी की तरह जीना चाहिए, भद्र व्यक्ति की तरह नहीं। कविता का भद्र होना ठीक नहीं। उसे सामान्य रहना चाहिए। कवि को पब्लिक फिगर नहीं होना चाहिए, सामान्य जन रहना चाहिए। अरुण कमल आज महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी

कार्यक्रम में बाएं से गौतम सान्याल, अरुण कमल, विश्वंभर नेवर और गोपेश्वर सिंह।

विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में आयोजित संवाद कार्यक्रम में पूछे गए प्रश्नों के जवाब दे रहे थे। आलोचक गौतम सान्याल के सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि कविता जीवन के अनुभवों से होनेवाले सुख को बढ़ा देती है। कविता का प्रभाव इतना पड़ता है कि वह व्यक्ति के चरित्र तक को बदल देती है।मुक्तिबोध ने खुद उनके चरित्र को प्रभावित किया। मृत्यु के डर को किया।

संवाद कार्यक्रम में बाएं से अरुण कमल, गोपेश्वर सिंह और डा. कृपाशंकर चौबे।

अरुण कमल ने कहा कि भाषा के बाहर कुछ भी घटित नहीं होता। भाषा के बाहर कविता भी संभव नहीं है। एक अन्य सवाल के जवाब में अरुण कमल ने कहा कि बिम्ब आरंभिक अवस्था है। बिम्ब बढ़ते-बढ़ते प्रतीक में बदल जाता है। एक दूसरे प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि पूरे एशिया में बौद्ध धर्म का प्रभाव पड़ा किंतु एशिया के साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव बहुत कम पड़ा। अरुण कमल का मानना था कि समूची विश्व कविता में विचार दरअसल रोमांटिक कविता के साथ आया। कविता और कला दोनों के लिए विचार की महत्वपूर्ण भूमिका है। नए कवियों में नए विचार और नए अनुभव आ रहे हैं। नए अनुभवों वाले नए स्वर का स्वागत किया जाना चाहिए। एक अन्य प्रश्न के जवाब में अरुण कमल ने कहा कि जब तक रचना मूर्त न हो जाए, रचनाकार प्रसव जैसी यातना से गुजरता है।वरिष्ठ पत्रकार विश्वंभर नेवर के सवाल के जवाब में अरुण कमल ने कहा कि हिंदी समाज में कविताके लिए प्रत्यक्षतः जगह नहीं है।

व्याख्यानःइस अवसर पर समकालीन कविता के सामाजिक सरोकार पर व्याख्यान देते हुए आलोचक डा. गोपेश्वर सिंह ने कहा कि हिंदी कविता की अपनी बुनियादी समस्याएं हैं। आज के कवि से वही अपेक्षाएं नहीं हैं जो पहले के कवियों से थीं। संवाद कार्यक्रम का संचालन युवा कवि निशांत ने किया और धन्यवाद ज्ञापन महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

14 मार्च 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

नए कथाकारों में भाषा की अवज्ञा चिंताजनकः महेश कटारे

कोलकाता, 14 मार्च। वरिष्ठ कथाकार महेश कटारे ने कहा है कि नए कथाकारों में भाषा की अवज्ञा चिंताजनक है। कई ऩए कथाकारों की भाषा ऐसी होती है जिसे न हिंदी कह सकते हैं न

अंग्रेजी न हिंग्लिश। श्री कटारे आज महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में 'समकालीन कहानी की समय सापेक्षता' पर व्याख्यान दे रहे थे।

श्री कटारे ने कहा कि नई पीढ़ी के कई कथाकार शब्दों के अर्थ बोध के प्रति भी सतर्क नहीं हैं। उन्हें नहीं पता कि जिस शब्द का वे प्रयोग कर रहे हैं, उसका अर्थ पाठक क्या लगाएगा। यह बेचैन करनेवाली स्थिति है। उन्होंने कहा कि कहानी में लांच जैसे शब्द गलत हैं। यह साहित्य की नहीं, कार्पोरेट की शब्दावली है। आज की कहानियों में चौंकानेवाली भाषा तो है पर सही अर्थ बोध को अभिव्यक्त करने में वह सक्षम नहीं है। कहानी में शिल्प और वस्तु के प्रति जितनी सजगता जरूरी है, उतनी ही कसक का होना आवश्यक है। कहानी को बेहतर फलक देने के लिए कसक का होना आवश्यक है। इस संदर्भ में उन्होंने गालिब की यह कविता सुनाई-कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीर- ए-नीमकश को। वो खलीश कहां से होती, जो जिगर के पार होता। रगे संग से टपकता वो लहू कि फिर न थमता जिसे गम समझ रहे हो अगर वो शरार होता।

इसी तरह कहानी के लिए कसक का होना जरूरी है। श्री कटारे ने कहा कि कहानी का भविष्य

व्याख्यान देते महेश कटारे। मंच पर बैठे हैं कृपाशंकर चौबे।

साहित्य के भविष्य से जुड़ा है। यदि कहानी का भविष्य बेहतर होगा तो साहित्य का भविष्य भी बेहतर होगा। श्री कटारे ने कहा कि प्रगतिशील आंदोलन ने कहानी के कथ्य व शिल्प को बहुत प्रभावित किया। यह प्रभाव बहुत सकारात्मक रहा।

18 मार्च 2012स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

जनता से नहीं कटे हैं हिंदी लेखकः नामवर सिंह

कोलकाता 18 मार्च। हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्य समालोचक और महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. नामवर सिंह ने कहा है कि यह धारणा गलत है कि हिंदी के साहित्यकार जनता से कट गए हैं। डा. सिंह महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के

कोलकाता केंद्र में आयोजित एक संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हाल में संपन्न दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले में हिंदी प्रकाशकों के मंडपों पर पाठकों की उमड़ी भीड़ और किताबों की बढ़ी विक्री से साफ है कि लेखकों और पाठकों में संबंध बना हुआ है। उन्होंने कहा कि विश्व पुस्तक मेले में सबसे अधिक विक्री हिंदी पुस्तकों की हुई और कालेज व विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने बड़ी तादाद में किताबें खरीदी। पुस्तक मेले में उत्सव का जो उल्लास था, वह जयपुर के साहित्य उत्सव से भिन्नथा। जयपुर के उत्सव

संगोष्ठी में प्रो. नामवर सिंह। साथ में डा. कृपाशंकर चौबे।

में तो बाजारवाद का जबर्दस्त असर था। डा. सिंह ने कहा कि हिंदी पाठकों को अनुवाद के जरिए भारतीय भाषाओं समेत विश्व का श्रेष्ठ साहित्य भी सुलभ है। डा. सिंह का कहना था कि अनुवाद के जरिए हिंदी लगातार भारतीय भाषाओं में पारस्परिक साझेदारी को बढ़ा रही है। भारतीय भाषाओं में ऐसा ही सहकार संबंध काम्य है। भारतीय भाषाओं और साहित्य का यह पारस्परिक

आदान-प्रदान जितना बढ़ेगा, उतना ही हिंदी के प्रति अन्य भाषियों में व्याप्त आशंकाएं दूर होंगी। हिंदी को अब पूर्वोत्तर पर भी ध्यान देना होगा। वहां की रचनाओं का अब तक हिंदी में अनुवाद नहीं होने से ही आज तक पूर्वोत्तर का दर्द भारतीय दर्द नहीं बन पाया है। इसे ध्यान में रखते हुए ही महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने पूर्वोत्तर के साहित्य को हिंदी में लाने की योजना बनाई है। उन्होंने उम्मीद जताई कि हिंदी विश्वविद्यालय का कोलकाता केंद्र बंगाल ही नहीं, पूर्वोत्तर के प्रदेशों और पड़ोसी देशों में भाषा सेतु की ऐतिहासिक भूमिका निभाएगा।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कि मौजूदा कुलपति विभूतिनारायण राय के कार्यकाल में वर्धा परिसर पूरी तरह से विकसित हो गया है और अब कुलपति का सारा ध्यान विश्वविद्यालय के कोलकाता और इलाहाबाद केंद्रों के विकास पर है। डा. सिंह ने उम्मीद जताई कि कि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय का कोलकाता केंद्र बांग्ला के अतिरिक्त पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद जल्द शुरू कर देगा। उन्होंने विश्वास जताया कि मौजूदा कुलपति विभूति नारायण राय के कार्यकाल में कोलकाता केंद्र भाषा सेतु की ऐतिहासिक भूमिका निभा सकेगा। संगोष्ठी में कोलकाता के बुद्धिजीवी भारी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

1 अप्रैल 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

साहित्य के सम्मानों में सियासत का जोर : चंद्रकांत देवताले

कोलकाता। कवि सिर्फ कवि होता है। उसे किसी विशेषण की दरकार नहीं होती। कवि को मन से आदिवासी होना चाहिए। मैने ताउम्र इसकी कोशिश की है। यह मानना है हिंदी के चर्चित कवि चंद्रकांत देवताले का। वह रविवार की शाम महात्मा गांधी हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता सेंटर में छात्रों से मुखातिब थे। मौका था संवाद का। उनसे औपचारिक संवाद किया जेके भारती और कथाकार सृंजय ने। इस मौके पर देवताले ने संत तुकाराम पर हाल ही में लिखी आठ पंक्तियां भी सुनाई। उन्होंने कहा कि मुक्तिबोध को दायरे में बांधकर उनकी कविताओं पर चर्चा नहीं की जा सकती। वे एक आम इंसान थे। यही उनकी सबसे बड़ी खूबी भी थी। पुरस्कारों की राजनीति पर पूछे गए एक सवाल के जवाब में उन्होंने स्वीकार किया कि साहित्य जगत के

सम्मानों और पुरस्कारों में घोर सियासत होती है। देवताले ने कहा कि कविता लिखने के लिए किसी खास मौसम या मौके की तलाश करने वाले लोगों से मुझे नफरत है। मैं तो कहीं भी, कभी भी कविता लिख लेता हूं।

संगोष्ठी में बाएं से चंद्रकांत देवताले, सुनीता मंडल, जेके भारती और डा. कृपाशंकर चौबे।

देवताले ने कहा कि कवि एक साधारण आदमी होता है वह अपने भीतर की आवाज को साहस के साथ कहता है मेरी हर कविता अच्छी है जिंदगी की भाप हैं मेरी कविताएं कवि हमेशा आदिवासी होता है क्योंकि वह अपनी धरती, भाषा व पर्यावरण को बचाने के लिए हमेशा संघर्ष करते रहता है कवि को आत्ममुग्धता से बचना चाहिए कोई भी सम्मान मिलता है, वह मेरी परंपरा का सम्मान होता है यह प्रसिद्धि हमेशा खतरे की निशानी है कवि किसी एक भाषा और देश का नहीं होता है।

ये बातें महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (वर्धा) के कोलकाता क्षेत्रीय केंद्र की ओर से आयोजित समकालीन कविता की समय सापेक्षता विषयक संगोष्ठी में हिंदी के वरिष्ठ कवि चंद्रकांत देवताले ने कहीं। उन्होंने कहा कि वैश्विक आंधी में शब्द अर्थ खोते जा रहे हैं। वैश्वीकरण, पूंजीवाद व विज्ञापन संस्कृति ने आज आमलोगों को जमीन से उखाड़ दिया है भले ही हमारे सामने टावर और एंटेना खड़े हो रहे हैं, लेकिन धरती पर पांव नहीं उन्होंने कहा कि देश के विश्वविद्यालयों ने पुस्तक संस्कृति को मार डाला है पुस्तक संस्कृति जब तक नहीं बढ़ेगी, तब तक विवेक कैसे जागृत होगा सार्थक कवि से अधिक जरूरी कवि होना है उन्होंने अकादमिक स्तर के पुरस्कारों की विश्वसनीयता खंडित होने के संबंध में पूछे जाने पर कहा कि जातीयता और क्षेत्रीयता इसमें बड़े ढंग से काम करती है जिन कवियों ने पाखंडों पर प्रतिवाद किया है, वे आज भी प्रासंगिक हैं रचनाकारों को कभी भी संतुष्ट नहीं होना चाहिए मेरे भीतर मेरा अध्यापक हमेशा जिंदा रहता है उन्होंने बताया कि सम्मान के रूप में जो भी शॉल मिलता है, उसे वह जरूरतमंद लोगों को दे देते हैं, ताकि उनकी ठिठुरन कुछ कम हो। संगोष्ठी में जेके भारती, सृंजय एवं सुनीता मंडल ने भी हिस्सा लिया। विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र के प्रभारी डॉ कृपा शंकर चौबे ने संचालन किया।

12 अप्रैल 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

पत्रकारिता का कोई समालोचना शास्त्र नहीं-अच्युतानंद मिश्र

कोलकाता, 12 अप्रैल। माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति तथा हिंदी के सुप्रसिद्ध पत्रकार अच्युतानंद मिश्र ने कहा है कि पत्रकारिता का समालोचना शास्त्र होना चाहिए किंतु उसका कोई समालोचना शास्त्र नहीं है। श्री मिश्र आज शाम महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में पत्रकारिता और साहित्य के अंतर्संबंध पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

श्री मिश्र ने कहा कि आजादी की लड़ाई में जो पत्रकारिता मिशन थी, वह परवर्ती काल में प्रोफेशन बनी और अब कमिशन बन गई है। हिंदी पत्रकारिता और हिंदी साहित्य ने पिछले पौने दो सौ वर्षों में साथ-साथ विकास किया। हिंदी गद्य के निर्माण का अधिकांश श्रेय हिंदी पत्रकारों

को है जिन्होंने अपनी हड्डियां गलाकर हिंदी की समृद्ध विरासत खड़ी की। लेकिन आजादी के बाद पत्रकारिता न सिर्फ साहित्य से दूर हुई उसने कुछ अपवादों को छोड़कर सरकारी सुविधाओं के आगे घुटने भी टेक दिए और आज वह मुनाफे के धंधे में डूब गई है। युवा प्राध्यापक अभिजीत सिंह ने कहा कि साहित्य से कटकर पत्रकारिता अपना ही अहित कर रही है। इस अवसर पर अच्युतानंद मिश्र ने श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। संगोष्ठी का संचालन युवा

संगोष्ठी में बाएं से कृपाशंकर चौबे, जेके भारती, अच्युतानंद मिश्र और सुनीता मंडल।

प्राध्यापक जेके भारती ने किया। स्वागत भाषण डा. कृपाशंकर चौबे और धन्यवाद ज्ञापन कांचरापाड़ा कालेज की हिंदी विभागाध्यक्ष सुनीता मंडल ने किया। संगोष्ठी के आखिर में गाजीपुर से आए जाने-माने लोक कलाकार विजय यादव ने भोजपुरी लोकगीत पेशकर कार्यक्रम में उपस्थित साहित्य प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

22 अप्रैल 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

नकारात्मक प्रवृत्ति पत्रकारिता के लिए घातक--डा. पृथ्वीश नाग

कोलकाता, 22 अप्रैल। सुप्रसिद्ध भूगोलविद् और महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति डा. पृथ्वीश नाग ने कहा है कि पत्रकारिता में नकारात्मक प्रवृत्ति बढ़ रही है और सकारात्मक खबरें निरंतर सिकुड़ती जा रही हैं। यह प्रवृत्ति घातक है, इससे बचना होगा। डा. नाग आज शाम महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र

कार्यक्रम में काशी विद्यापीठ के कुलपति डा. पृथ्वीश नाग का शाल ओढ़ाकर अभिनंदन करते समीर गोस्वामी। सबसे बाएं प्रो. राममोहन पाठक और सबसे दाएं हरिराम पांडेय।

में समकालीन पत्रकारिताः परिवर्तन और प्रवृत्तियां पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे थे। संगोष्ठी में काशी विद्यापीठ के एमजेएमसी के 35 विद्यार्थियों ने विशेष रूप से हिस्सा लिया। डा. नाग का कहना था कि यह विशेषज्ञता का दौर है। पत्रकारिता के विद्यार्थियों को

खबरों की प्रस्तुति से लेकर अखबारों की साज-सज्जा तक मेंविशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए। सत्य और तथ्य के मान की रक्षा का उनमें जज्बा भी होना चाहिए।

काशी विद्यापीठ के पत्रकारिता संस्थान के निदेशक और संकायाध्यक्ष डा. राममोहन पाठक ने कहा कि समकालीन पत्रकारिता में पेड न्यूज सरीखी कई विकृतियां आ गई हैं, इसके बावजूद मिशनरी भावना से काम करनेवाले पत्रकार भी बचे हुए हैं। पूर्व रेलवे के मुख्य जन संपर्क अधिकारी समीर गोस्वामी ने कहा कि अब गंभीर खबरें भी मनोरंजन की शक्ल में दी जा रही हैं। इस घातक प्रवृत्ति को नहीं रोका गया तो इसके सांघातिक नतीजे होंगे। वरिष्ठ पत्रकार हरिराम पांडेय ने कहा कि सूचना और समाचार में फर्क किया जाना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

28 मई 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

दुनियाभर में प्रतिरोध का चेहरा एक जैसा-डा. चमनलाल

कोलकाता। हिन्दी के साहित्य समालोचक और अनुवादक डॉ. चमनलाल ने कहा है कि दुनियाभर में प्रतिरोध की संस्कृति का चेहरा एक जैसा है। समाज अलग-अलग होते हैं पर जुल्म अथवा गरीबी के खिलाफ क्रांतिकारी कार्यक्रम एक जैसे होते हैं। डा. चमनलाल महात्मा गांधी अंतर्राष्टीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में प्रतिरोध की संस्कृत पर व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कहा कि दुनिया में जगह-जगह प्रतिरोध अभी हाल में हुए। इस प्रतिरोध में उस निनानबे प्रतिशत जनता ने हिस्सा लिया जिसका खून चूसकर एक प्रतिशत आबादी अपार दौलत की मालिक बनी है। उस एक प्रतिशत आबादी की दौलत छिने बगैर समता की बात क्या की जा सकती है?

डा. चमनलाल ने कहा कि क्रांति के लिए क्यूबा का उदाहरण विरल है जहां फिदेल कास्त्रो तथा चे ग्वेवारा के नेतृत्व में महज बीस लोगों ने क्रांति की शुरुआत करके पांच साल से कम समय में तानाशाह सरकार की अस्सी हजार से ज्यादा फौज को नष्ट करके क्रांति संपन्न कर दी। उन्होंने क्यूबा क्रांति के नायक चे ग्वेवारा और भारत के क्रांतिकारी नायक भगत सिंह के बीच

समानताओं का जिक्र करते हुए दोनों की निडरता और जनता के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। डा. चमनलाल ने कहा कि भगत सिंह ने अपनी फांसी का विरोध किया था और कहा था- हम जंगी कैदी हैं, हमें गोली से उड़ाओ। क्रांतकारी गोली से नहीं डरते। मौत से नहीं डरते।

व्याख्यान देते डा. चमनलाल। मंच पर बैठे हैं डा. कृपाशंकर चौबे।

प्रोफेसर चमनलाल ने मणिपुर का उदाहरण देते हुए बताया कि 1891 में अंग्रेजों ने मणिपुर पर कब्जा किया और वहां के युवराज टिकेंद्रजित सिंह और सेनापति थांगला जनरल को आतंक फैलाने के लिए आठ हजार श्वेत वस्त्रधारी स्त्रियों के सामने फांसी दी तो थांगला जनरल ने अट्टहास कर फांसी चढ़ते हुए ब्रिटिश उपनिवेशवाद की अकड़ धूल में मिला दी। इसी परंपरा में अगर आज का उदाहरण लें तो मणिपुर की इरोम शर्मिला चानू ने ग्यारह वर्षों से भूख हड़ताल कर एक दृष्टांत दुनिया के सामने पेश किया है। इरोम का चेहरा संघर्ष से दमकता चेहरा है। इरोम को फोर्स फिडिंग कराई जाती है। उसने अपने मातृत्व का बलिदान किया है। अपनी मां से

वह ग्यारह साल से नहीं मिल पाई है। डा. चमनलाल ने कहा-मैं अभी इरोम की मां से मिलकर आ रहा हूं। मांबेटी में समझौता है कि जब तक सशस्त्र बल विशेष अधिकार कानून रद्द नहीं हो जाता, वे नहीं मिलेंगी। संगोष्ठी को जेके भारती, डा. अभिज्ञात, सुशील कांति और बीके उपाध्याय ने भी संबोधित किया।

संगोष्ठी के बाद डा. चमनलाल से संवाद का कार्यक्रम हुआ। चमनलाल ने वरिष्ठ कथाकार विमलेश्वर द्विवेदी, अनवादक व रंगकर्मी सुशील कांति और साहित्यकार रावेल पुष्प के सवालों के खुलकर जवाब दिए। संगोष्ठी व संवाद कार्यक्रम का संचालन कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

कोलकाता केंद्र में तीन जून 2012 को आयोजित हुई केंद्रीय विश्वविद्यालयों की संयुक्त प्रवेश परीक्षा

कोलकाता, 3 जून 2012। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में आज सात केंद्रीय विश्वविद्यालयों की संयुक्त प्रवेश परीक्षा (सीयूसीईटी 2012) आयोजित हुई। कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे इस परीक्षा के केंद्र प्रभारी थे। इस प्रवेश परीक्षा में विभिन्न विषयों में एमए, एमफिल तथा पीएच.डी के शताधिक प्रवेशार्थियों ने भाग लिया। सेंट्रल यूनिवर्सिटी आफ झारखंड के उप कुलसचिव डा. कालीपद महंत ने पत्र लिखकर इस प्रवेश परीक्षा का कुशलता पूर्वक संचालन करने के लिए डा. चौबे के प्रति आभार प्रकट किया।

14-15 जुलाई 2012, स्थान-भारतीय भाषा परिषद का सभा कक्ष हिंदी ही देश को जोड़ती है-महाश्वेता देवी

कोलकाता। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र द्वारा ग 14 और 15 जुलाई 2012 को भारतीय भाषा परिषद सभा कक्ष में 'हिंदी और पूर्वोत्तर की भाषाएं' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इसका उद्घाटन करते हुए विख्यात लेखिका महाश्वेता देवी ने कहा कि हिंदी ही पूरे देश को जोड़ती है। उन्होंने पूर्वोत्तर में हिंदी के समुचित विकास को सुनिश्चित करने की जरूरत पर बल दिया। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए

विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि पूर्वोत्तर की भाषाओं के साथ हिंदीकी पारस्परिकता को बढ़ाना उनके विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र का मुख्य मकसद है।

संगोष्ठी में महाश्वेता देवी और कुलपति विभूतिनारायण राय

डा. देवराज ने कहा कि हिंदी और पूर्वोत्तर का बहुत गाढ़ा नाता है। अनुवादकों की एक लंबी परंपरा रही है जो पूर्वोत्तर के साहित्य को हिंदी में ला रहे हैं। डा गोपाल प्रधान का कहना था कि उत्तर पूर्व एक प्रशन है। रविशंकर रवि का कहना था कि उतर पूर्व का जो साहित्य अनुवाद के जरिए हिंदी में उपलब्ध हुआ वह बहुत समृद्ध है। शंभुनाथ ने कहा कि हिंदी पूर्वोत्तर में भाषा सेतु बंधन की भूमिका निभाने में समर्थ हो रही है।

संगोष्ठी में बाएं से जोरम अनिया टाना, मिलन रानी जमातिया, कृपाशंकर चौबे, विभूतिनारायण राय, देवराज और जोशी जोसेफ।

डा. कृष्णमोहन झा ने समूचे पूर्वोत्तर में हिंदी के परिदृश्य पर, जोरम अनिया टाना ने मिजोरम में हिंदी की स्थिति पर, एच. डेंगकिमी ने अरुणाचल में हिंदी शिक्षा की समस्या पर, डा. भरत प्रसाद ने मेघालय में हिंदी की दशा पर, मिलनरानी जमातिया ने

त्रिपुरा पर वक्तव्य दिया।

संगोष्ठी में उपस्थित श्रोता। फोटो-राजेश अरोड़ा

दूसरे सत्र में हिंदी की बंगीय भूमिका पर डा. अमरनाथ, डा. तनुजा मजुमदार, नवारुण भट्टाचार्य, गौतम सान्याल, प्रसून भौमिक ने वक्तव्य दिए। डा. हरिश्चंद्र मिश्र ने हिंदी और ओड़िया के संबंधों पर वक्तव्य दिया। संगोष्ठी के एक सत्र का संचालन जेके भारती और दूसरे सत्र का संचालन प्रमथनाथ मिश्र ने किया। धन्यवाद ज्ञापन कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया। संगोष्ठी की व्यवस्था संभालने में कुलपति के निजी सचिव तथा महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विवि कर्मचारी संघ के महासचिव राजेश अरोड़ा ने बहुत सहयोग किया।

28 जुलाई 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

पड़ोस को देखे बंगालः नवारुण भट्टाचार्य

कोलकाता। बांग्ला के वरिष्ठ कवि तथा कथाकार नवारुण भट्टाचार्य ने कहा है कि

संगोष्ठी को संबोधित करते नवारुण भट्टाचार्य।

हिंदी समेत भारतीय भाषाओं का साहित्य बांग्ला में अनुवाद कर लाने की मौजूदा कोशिशें अपर्याप्त हैं। हिंदी ने तो बांग्ला के साथ एकतरफा संबंध बना रखा है। इस वन वे ट्राफिक को टू वे बनाने के लिए सरकारी और गैर सरकारी दोनों मोर्चे पर ठोस प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि उनकी पत्रिका भाषा बंधन ने हिंदी समेत भारतीय भाषाओं का साहित्य बहुत आदर के साथ छापा है किंतु वह काफी नहीं है। बंगाल के बड़े प्रकाशकों को भी आगे आना होगा। हिंदी-बांग्ला अंतर्संवाद पर आयोजित इस संगोष्ठी को बांग्ला लेखक सुकुमार मित्र तथा कवि प्रसून भौमिक ने

भी संबोधित किया। संगोष्ठी के दूसरे सत्र में नवारुण भट्टाचार्य से भौमिक तथा सुकुमार ने संवाद किया। कार्यक्रम का संचालन कृपाशंकर चौबे ने किया।

30 अगस्त 2012, स्थान कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

सांस्कृतिक सापेक्षतावाद की जरूरतः प्रो. नदीम हसनैन

कोलकाता। देश के जाने-माने समाज विज्ञानी प्रो. नदीम हसनैन ने कहा है कि किसी समुदाय, क्षेत्र, जाति या धर्म के लिए स्टीरियो टाइप पहचान बनाना भारत के एकीकरण के लिए खतरनाक है। प्रो. हसनैन महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में 'जातीय समाजों का भाईचाराः विशेष संदर्भ-पूर्वोत्तर' पर आयोजित संगोष्ठी में बीज भाषण कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ताकतवर प्रचार माध्यमों में मुसलमानों और दक्षिण भारतीयों के बारे में जो स्टीरियो टाइप पहचान बना दी गई है, उसी तरह का बिंब पूर्वोत्तर के बारे में हमारे मानस में बना दिया दिया गया है। इस चुनौती का मुकाबला हम सांस्कृतिक सापेक्षतावाद से ही कर सक्ते हैं जिसमें दूसरी संस्कृति की वैधता को खारिज नहीं किया जाता।उन्होंने कहा कि दूसरे समुदाय, क्षेत्र, जाति या धर्म के बारे में पूर्वाग्रहों से तैयार किए गए सांचे में ढाल कर सोचने का बढ़ता चलन जातीय समाज के भाईचारे को बेतरह प्रभावित कर रहा है। दूसरे धर्म, जाति, समुदाय की अपेक्षा खुद को श्रेष्ठ मानने की सोच जहां निरंतर बढ़ रही है वहीं इसे रोकने के प्रयास काफी कम हैं। प्रो. हसनैन ने कहा और तो और, देश की राजधानी दिल्ली तक में पूर्वोत्तर के लोगों के साथ ज्यादतियां हो रही हैं। पुलिस उन्हें संदेह की दृष्टि देखती है। उन्हें अक्सर अपने ही देश में विदेशी समझ लिया जाता है। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर के साथ देश के अन्य हिस्सों के लोगों की नजदीकी बढ़ाने के ठोस प्रयास करने होंगे। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए फिल्म डिवीजन के निदेशक तथा सुपरिचित फिल्मकार जोशी जोसेफ ने कहा कि पूर्वोत्तर की जनजातियों और वहां के समाज में अनेक सांस्कृतिक विशिष्टताएं हैं, जिसके बारे में बाकी देश के लोगों को जानकारी ही नहीं है। संगोष्ठी को बांग्ला लेखक जयजीत घोष, भोजपुरी लेखक हरेंद्र पांडेय, कवि-कथाकार सेराज खान बातिश, उर्दू की लेखिका डा. जरीना जर्री, मानवाधिकार कार्यकर्ता तथा फिल्मकार शाहनवाज आलम ने भी संबोधित किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए बांग्ला के

वरिष्ठ साहित्यकार नवारुण भट्टाचार्य ने पूर्वोत्तर के सामाजिक-सांस्कृतिक वैशिष्ट्य की उपेक्षा

संगोष्ठी को संबोधित करते प्रो. नदीम हसनैन। उनके दाएं हैं जयजीत घोष, नवारुण भट्टाचार्य, कृपाशंकर चौबे और सेराज खान बातिश

को दुर्भाग्यपूर्ण बताया। संगोष्ठी के दूसरे सत्र में प्रो. नदीम हसनैन से संवाद का कार्यक्रम रखा गया। प्रो. हसनैन ने कहा कि समूहों में संवादहीनता कायम रहने से ही सांस्कृतिक परिवर्तन शुष्क और शिथिल हुआ है। कार्यक्रम की शुरुआत युवा रंगकर्मी तथा अनुवादक सुशील कांति के कबीर के पद 'साधो ये मुर्दों का गांव' के गायन से हुई। आखिर में विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर तथा कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

14 सितंबर 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

कोलकाता केंद्र में भारतीय भाषा दिवस के रूप में मना हिंदी दिवस

कोलकाता, 14 सितंबर। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने आज हिंदी दिवस को भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाया। शुक्रवार की शाम कोलकाता केंद्र में आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए हिंदी के विख्यात कवि केदारनाथ सिंह ने कहा कि देश में पहली बार यहां हिंदी दिवस को भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाया गया और इसके लिए सबसे उपयुक्त मंच महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ही है। इस राष्ट्रीय पहल की जितनी तारीफ की जाए, कम है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में जिस तरह

कार्यक्रम को संबोधित करते केदारनाथ सिंह। मंच पर दाएं से नवारुण भट्टाचार्य, चंद्रा पांडेय और जेके भारती

डा. चंद्रा पांडेय ने काकबराक, डा. सत्यप्रकाश तिवारी ने नेपाली, डा. मुन्नी गुप्ता ने नगा, प्रो. साधना झा ने मैथिली, डा. श्रीनिवास यादव ने बांग्ला, प्रो. जेके भारती ने भोजपुरी और रावेल पुष्प ने पंजाबी कविताओं की आवृत्ति की, उससे भारतीय भाषाओं में बंधन की संभावना को बल मिलेगा।

कार्यक्रम में बाएं से डा. केदारनाथ सिंह, नवारुण भट्टाचार्य और डा. कृपाशंकर चौबे।

डा. केदारनाथ सिंह ने कहा कि पूर्वोत्तर की भाषाओं की कविताएं सुनने के बाद उन्हें लग रहा है कि वहां साहित्य में एक नवजागरण आ रहा है। उन्होंने कहा कि कोई भाषा प्रधान या गौण नहीं होती। भारत की सभी भाषाएं राष्ट्रभाषा हैं। हिंदी राजभाषा है। हिंदी बहुत बड़े समुदाय द्वारा बोले जाने के कारण राजभाषा बनी। सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में राजभाषा विभागों के कामकाज का आज तक आकलन नहीं हुआ है। केदारनाथ सिंह ने कहा कि हमें देखना होगा कि दी तमाशा की भाषा न बने, वह जीवंत भाषा के रूप में ही रहे।

समारोह को संबोधित करते हुए बांग्ला के वरिष्ठ कवि - कथाकार नवारुण भट्टाचार्य ने कहा कि मातृभाषा के प्रति प्रेम एक मूल्य की तरह होना चाहिए। मातृभाषा से अनन्य प्रेम होने के कारण ही बंकिम से लेकर माइकल मधुसूदन दत्त अंग्रेजी में लिखना छोड़कर बांग्ला में लिखने लगे। नवारुण ने कहा-मैं खुद आजीवन बांग्ला में लिखते हुए ही मरना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं में एक से बढ़कर एक लेखक हैं। हिंदी में ही प्रेमचंद से लेकर केदारनाथ सिंह जैसे भारतीय साहित्यकार नोबेल पुरस्कार के योग्य हैं।

हिंदी दिवस पर आयोजित संगोष्ठी तथा संवाद कार्यक्रम की शुरुआत सुशील कांति के हिंदी-बांग्ला गीतों की प्रस्तुति से हुई। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों ने हिंदी दिवस पर आयोजित संगोष्ठी तथा संवाद कार्यक्रम में हिस्सा लिया। धन्यवाद ज्ञापन वि.वि. के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डॉ. कृपाशंकर चौबे ने किया।

13 अक्टूबर 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

कलाएं एक परिवार की तरह हैं-कुमार अनुपम

कोलकाता, 13 अक्टूबर। सुपरिचित युवा कवि चित्रकार तथा कला समीक्षक कुमार अनुपम ने कहा है कि कलाएं एक परिवार की तरह हैं और उनका आपस में संबंध जितना संवेदनात्मक होता है, उतना ही जैविक भी। कुमार अनुपम आज महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में 'कलाओं का सहकार-संबंध' पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। कुमार अनुपम ने कहा कि एक रचनाकार कई विधाओं में काम करता है और वह अपने अनुभव को एक विधा में व्यक्त कर सकता है और जब उसे लगता है कि उसे वह विशेष संपूर्णता में

संप्रेषित नहीं कर पाया तो उस अनुभव को दूसरी विधा में बरतने का प्रयास करता है। उन्होंने कलाओं के अंतर्संबंध के आईने में अपनी ही कविता स्तोभक्रिया माने बोलना अर्थहीन शब्दों के बोल का पाठ किया। उन्होंने अपनी चुनिंदा दूसरी कविताएं भी सुनाईं।

संगोष्ठी को संबोधित करते कुमार अनुपम। उनके दाएं हैं नीलम कुमारी, भोला प्रसाद सिंह और नागेश्वर शर्मा।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए साहित्य के गंभीर अध्येता भोला प्रसाद सिंह तथा रंगकर्मी त्रय पार्थसारथी सरकार, विजय राय और सुशील कांति ने कहा कि कलाओं का समुच्चय नाटकों में दिखता है। पार्थसारथी, विजय और सुशील ने नाटकों के कई गीत भी सुनाए। पंकज सिंह ने लोक-गीत सुनाया तो कलावती कुमारी, मुकेश मंडल और धीरज सिंह ने काव्य आवृत्ति की। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ नाट्य निर्देशक, लेखक तथा अनुवादक जितेंद्र सिंह ने कहा कि नाटक के अलावा सिनेमा में सभी कलाएं घुल-मिल जाती हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे लगातार सांस्कृतिक प्रयत्न करने होंगे जो कलाओं के अंतर्संबंध को मजबूती देने में सहायक हों।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में चित्रकार नागेश्वर शर्मा से संवाद का कार्यक्रम रखा गया। श्री शर्मा ने विस्तार से अपने चित्रकार बनने की कहानी सुनाई। उन्होंने अपनी सृजन प्रक्रिया पर भी प्रकाश डाला। इस अवसर श्री शर्मा की चित्रकृतियों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। संगोष्ठी तथा संवाद कार्यक्रमों का संचालन नीलम कुमारी ने किया। स्वागत भाषण तथा धन्यवाद ज्ञापन विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर तथा कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

6 नवंबर 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

धर्मनिरपेक्षता का कोई विकल्प नहीं- विभूतिनारायण राय

कोलकाता, 6 नवंबर। हिंदी के सुपरिचित उपन्यासकार तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूतिनारायण राय ने कहा है कि धर्मनिरपेक्षता का कोई विकल्प नहीं है। श्री राय आज विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में बुद्धिजीवियों के पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे।

इस संवाद में प्रो. अमरनाथ, डा. जरीना जर्री, प्रसून भौमिक, विश्वंभर नेवर, हरिराम पांडेय, मृत्युंजय कुमार सिंह, प्रियंकर पालिवाल, प्रो. जेके भारती, प्रो. सुनीता मंडल, सुभाष मंडल और मनीषा यादव ने श्री राय से प्रश्न पूछे। श्री राय ने कहा कि बिना धर्मनिरपेक्ष हुए हम आधुनिक नहीं हो सकते। उन्होंने कहा कि अधिकतर मुसलमान यदि भारतीय राज्य और पुलिस के प्रति अविश्वास रखता है तो उसके वैध कारण हैं। विश्वास तभी जन्मेगा जब भारतीय राज्य अपने आचरण में सुधार करेगा।

उन्होंने कहा कि यह धारणा गलत है कि अधिकतर मुसलमान स्वभावतः क्रूर होते हैं। आजादी के बाद जितने दंगे हुए उसमें मुसलमान ही ज्यादा मरे।

उन्होंने अपनी नई किताब हाशिमपुरा, अपने शोध प्रबंध दंगे और भारतीय पुलिस और उपन्यास शहर में कर्फ्यू से संबंधित सवालों के जवाब भी खुलकर दिए।

श्री राय ने कहा कि सांप्रदायिकता कोई हल नहीं। संवाद कार्यक्रम की शुरुआत कवि-गायक मृत्युंजय कुमार सिंह के काव्य संगीत से हुई। कार्यक्रम का संचालन कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते विभूति नारायण राय। उनके दाएं हैं प्रो. अमरनाथ, प्रियंकर पालिवाल और डा. कृपाशंकर चौबे।

संवाद सत्र के बाद दूसरे सत्र में सुनील गंगोपाध्याय का स्मरण किया गया। इस सत्र को सुशील कांति, प्रियंकर पालिवाल, प्रसून भौमिक और अमरनाथ ने संबोधित किय। अध्यक्षता कुलपति विभूति नारायण राय ने की। सुशील कांति ने सुनील दा की कविताओं की आवृत्ति की। उन्होंने काव्य संगीत भी पेश किया।

25 दिसंबर 2012 स्थान-कोलकाता केंद्र का सभा कक्ष

बांग्ला कविता में समय की धड़कन सुनी जा सकती हैः अभीक

कोलकाता, 25 दिसंबर। बांग्ला के सुपरिचित कवि अभीक मजुमदार ने कहा है कि समकालीन बांग्ला कविता में इस खूंखार समय की धड़कन सुनी जा सकती है। श्री मजुमदार महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में बांग्ला कविता की समकालीनता विषय पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि समकालीन बांग्ला कविता में जीवन राग की लय सुनी जा सकती है।

संगोष्ठी में बाएं से जेके भारती, प्रसून भौमिक, अभीक मजुमदार, राजेंद्र राय और डा. कृपाशंकर चौबे।

बांग्ला कवि प्रसून भौमिक ने कहा कि आज की बांग्ला कविता के दृश्य में समूची दुनिया के हालात का चित्रण देखा जा सकता है। इस अवसर पर मजुमदार ने अपने चारों कविता संग्रहों- लिरिक वाहिनी, निशी प्रलाप, बारुद संकेत और मिड ले मिलेर थाला से चुनिंदा कविताओं का पाठ किया। उनकी कविता मिड ले मिलेर थाला से लेकर कागज नौका तक की अंतर्वस्तु को श्रोताओं ने बेहद पसंद किया। कागज नौका की काव्य पंक्तियां हैं-ग्रीष्म गेलो, वर्षा एलो। तोमार देहपटे, कोथाय जेनो रूपांतर घटे। इस अवसर पर प्रसून भौमिक ने भी अपने पांच काव्य संग्रहों-बूया उ बाबुई, भद्दरलोक, माटीर मानुष,द्रिमी द्रिमी हुल एकटि आग्नेयगिरिर तथ्यचित्र की चुनिंदा कविताओं का पाठ किया। संगोष्ठी के बाद अभीक मजुमदार से साहित्य व शिक्षा के सवालों पर राजेंद्र राय, प्रो. सुनीता मंडल, डा. प्रमथनाथ मिश्र, प्रतीक सिंह ने संवाद किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार **डा. कृष्णचंद्र गुप्त** ने की। संचालन जेके भारती ने और धन्यवाद ज्ञापन डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।